पवित्रता के संरक्षक

गुरु की उपस्थिति में और पवित्र स्थानों में
आचरण के लिए एक हृदयस्पर्शी मार्गदर्शिका

"ईश्वर के राज्य में बाघ की तरह बनो
और तुम्हारी प्रगति निश्चित है।"
—बाबूजी

पवित्रता के संरक्षक

गुरु की उपस्थिति में और पवित्र स्थानों में
आचरण के लिए एक हृदयस्पर्शी मार्गदर्शिका

परिचय

पवित्र स्थान केवल एक स्थान नहीं है; यह दिव्य ऊर्जा से ओतप्रोत एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आध्यात्मिक रूपान्तरण होता है। जब हम ध्यान कक्ष, पूजा स्थल या गुरु की उपस्थिति में जाते हैं तब हमें यह याद रखना चाहिए कि हम एक ऐसे जीवंत स्थान में प्रवेश कर रहे हैं जो आध्यात्मिक ऊर्जा से पूर्ण है। वहाँ हमारा आचरण न केवल हमारी आध्यात्मिक अवस्था को प्रभावित करता है बल्कि उस पवित्र स्थान को भी प्रभावित करता है।

अंदर प्रवेश करने से पहले, तैयार हो जाएँ।

1. आंतरिक तैयारी

किसी भी पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले, कुछ मिनट स्थिर बैठें। अपने मन को ऐसे स्थिर होने दें जैसे स्थिर पानी में मिट्टी बैठ जाती है। यह स्मरण रखें कि आप एक ऐसे स्थान में प्रवेश करने जा रहे हैं जहाँ दैवीय कार्य निरंतर हो रहा है। अपने हृदय में प्रार्थना करें – ''हे नाथ, इस पवित्र स्थान में जो कुछ प्रदान किया जाता है मुझे उसे ग्रहण करने योग्य बनाएँ। वह सब कुछ दूर कर दें जो आपके कार्य में बाधक है।''

2. शरीर की स्वच्छता

शरीर आत्मा के लिए एक मंदिर की तरह है, और जब आप किसी बड़े मंदिर में प्रवेश करते हैं तब तैयार रहना आवश्यक है। यदि हो सके तो स्नान कर लें। यदि नहीं, तो कम से कम अपने हाथ, पैर और मुख अवश्य धो लें। साफ़-सुथरे, सादे वस्त्र पहनें जो हल्के रंग के और ढीले हों। वे बहुत तंग या ध्यान भटकाने वाले न हों क्योंकि इससे आध्यात्मिक प्राणाहुति के प्रवाह में रुकावट आ सकती है। कृपया द्वार पर पहुँचने से पहले ही अपने जूते उतार दें और उन्हें व्यवस्थित रूप से एक तरफ़ रखें, ढेर में नहीं।

3. स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याएँ

यदि आपको बुखार, सर्दी, खाँसी या कोई भी संक्रामक रोग हो तो आपको पवित्र स्थान से दूर रहना चाहिए और अपनी गतिविधियों को सीमित रखना चाहिए। घर पर रहकर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना न केवल स्वयं की देखभाल है बल्कि दूसरों की भी देखभाल करने का एक तरीका है। किसी आध्यात्मिक सभा में जानबूझकर दूसरों को बीमार होने के जोखिम में डालना, ‘सबके प्रति प्रेम’ के सिद्धांत के विरुद्ध है। चूँकि मालिक सर्वत्र विद्यमान हैं इसलिए आप उनकी कृपा को अपने घर में रहकर भी प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों के प्रति सम्मान रखते हुए, आपका कुछ समय के लिए उस स्थान से दूर रहना अपने आप में एक आध्यात्मिक भेंट है।

4. मानसिक शुद्धता

अपनी सांसारिक चिन्ताओं को द्वार पर ही छोड़ दें, जैसे पुराने जूतों को उतार देते हैं। यदि बुरे विचार बार-बार आते रहें, तो कल्पना करें कि आप उन्हें द्वार के बाहर एक अदृश्य डिब्बे में रख रहे हैं ताकि बाद में आवश्यकता पड़ने पर आप उन्हें निकाल सकें। मन को एक खाली स्लेट की तरह होना चाहिए जो ईश्वर से उपहार प्राप्त करने के लिए तैयार हो।

पवित्र चौखट की ओर बढ़ना

5. मार्ग

पवित्र स्थान की ओर धीरे-धीरे और उद्देश्यपूर्ण कदम बढ़ाएँ। आपको अपने हर कदम का भान होना चाहिए और कदम उठाने में हड़बड़ी नहीं करनी चाहिए। आपके चलने का तरीका भी आध्यात्मिक साधना का एक अंग है। अपनी आँखें थोड़ी नीचे करें, शर्म के कारण नहीं बल्कि विनम्रता और आत्म-चिन्तन की भावना से।

6. द्वार पर

द्वार पर रुकें। यह मध्य स्थान जो सांसारिक और पवित्र स्थल के बीच का स्थान है - उसे पहचानें। भीतर से अपने गुरु और इस पवित्र स्थान का मानसिक रूप से अभिवादन करें। अपने दाहिने हाथ से अपने हृदय को स्पर्श करें, यह दर्शाने के लिए कि आपको ज्ञात है कि आप अपने भीतर आंतरिक परिवर्तन लाने वाले हैं।

7. पहला कदम

अपने दाहिने पैर से भीतर प्रवेश करें क्योंकि यह आपके प्रवेश की मंगलमयता का प्रतीक है। जैसे ही आप चौखट पार करते हैं, आपको ऐसा अनुभव होगा मानो आप एक संसार को छोड़कर दूसरे संसार में प्रवेश कर रहे हैं, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर।

पवित्र स्थान में आचरण

8. मुद्रा और गति

धीरे-धीरे व सावधानीपूर्वक चलें और कोई शोर न मचाएँ या अचानक हरकत न करें। यदि उस स्थान में चलना आवश्यक है तो किनारे से चलें। कभी भी गुरु के आसन या पवित्र भवन के केन्द्रीय स्थल के ठीक सामने से न जाएँ। अपनी पीठ

सीधी लेकिन आरामदायक मुद्रा में रखें; यह फूल की डंडी की तरह होनी चाहिए, सीधी लेकिन अकड़ी नहीं।

9. कहाँ बैठें

सोच-समझ कर निर्णय लें कि कहाँ बैठना है। आपको कभी भी गुरु से ऊँचे स्थान पर नहीं बैठना चाहिए न ही केन्द्रीय वेदी के निकट या उन लोगों के अत्यधिक निकट जो आपसे अधिक समय से साधना कर रहे हैं। यदि आप निश्चित नहीं हैं, तो पीछे या किनारे की ओर किसी नीचे स्थान का चयन करें। ऐसी मुद्रा में बैठें जिसमें आप स्थिर रहें और बिना हिले-डुले सहज रूप से उसी स्थिति में बने रह सकें।

10. मौन का महत्त्व

जब तक कोई आपसे बात न करे, चुप रहें। यह मौन केवल वाणी का अभाव न होकर एक खुलेपन की अवस्था होनी चाहिए। यहाँ तक कि अपने मन को भी निरंतर बोलने से रोकें। यदि बोलना आवश्यक है तो संकेत से बताएँ या बहुत धीमे स्वर में कहें और ऐसा केवल उन्हीं बातों के लिए करें जो वास्तव में महत्त्वपूर्ण हों।

11. हृदय से किया गया वार्तालाप

यदि आपको दूसरे लोगों से बात करनी हो तो, जैसा कि लालाजी कहते हैं, वह हृदय से की गई बातचीत होनी चाहिए। एक-दूसरे के साथ ऐसे बोलें कि आपके शब्द प्रेम व आदर से परिपूर्ण हों और वहाँ आत्मिक जुड़ाव हो। यहाँ तक कि शान्त वार्तालापों में भी ईश्वर के स्मरण की सुगंध होनी चाहिए। अपने वार्तालाप को प्रार्थना की तरह बनाएँ – संक्षिप्त, सच्चा और मन को उन्नत करने वाला। इसे कभी भी चुगली, शिकायतों या व्यर्थ की बातों में न परिवर्तित होने दें। पवित्र स्थान में बोले गए प्रत्येक शब्द से उस स्थान की पवित्रता बढ़नी चाहिए, घटनी नहीं।

12. दृष्टि कहाँ रखें

धीरे से अपना ध्यान मालिक या पवित्र केन्द्र पर रखें। यह टकटकी लगाकर देखना नहीं है; यह एक कोमल और खुली सजगता है। जब आप ध्यान नहीं कर रहे हों तब अपनी दृष्टि को थोड़ा नीचे रखें। इधर-उधर लोगों को न देखें और न ही अपने मन को भवन या उसकी सजावट के विवरणों में भटकने दें।

13. ध्यानमय अवस्था

जब तक कोई आपको ध्यान करने के लिए न कहे तब तक सक्रिय रूप से ध्यान करने की बजाय ध्यानमय अवस्था में रहें। यह अंतर बहुत महत्त्वपूर्ण है। ध्यानमय अवस्था में होने के लिए आपकी जागरूकता खुली व ग्रहणशील होनी चाहिए, एक शान्त झील की तरह जो आकाश को प्रतिबिंबित करने के लिए तैयार होती है। आपको सक्रिय ध्यान केवल तभी करना चाहिए जब गुरु आपको ऐसा करने के लिए कहें या किसी निर्धारित ध्यान सत्र के दौरान।

जब आप गुरु के साथ हों तब वैसे रहें जैसे एक फूल स्वाभाविक रूप से सूर्य की ओर मुख किए रहता है, बिना किसी प्रयास के। यह स्थिरता गुरु के कार्य को हमारे किसी भी हस्तक्षेप के बिना सहज रूप से होने देती है। हमारा काम केवल उपलब्ध रहना है, आध्यात्मिक अभ्यास करना नहीं। जब हम कुछ नहीं कर रहे होते हैं उस समय हम ईश्वर के प्रति सर्वाधिक ग्रहणशील होते हैं।

गुरु की उपस्थिति में

14. गुरु के समीप जाना

यदि आपको गुरु से मिलने के लिए बुलाया जाए तो विनम्र गरिमा के साथ ऐसा करें। न तो अधिक उत्सुकता से दौड़ते हुए जाएँ और न ही झूठी विनम्रता के कारण पीछे हटें। मेरे पास वैसे ही आएँ जैसे एक बच्चा अपने प्यारे माता-पिता के पास आता है – विश्वास, आदर और खुले हृदय के साथ।

15. अभिवादन

पारंपरिक प्रणाम, जिसमें हाथ जोड़कर झुकते हैं, हृदय से होना चाहिए न कि केवल एक शारीरिक भाव के रूप में। जब आप प्रणाम करने के लिए झुकें तो मन ही मन अपना अहंकार गुरु को अर्पित कर दें। आप किस हद तक झुकते हैं, यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी उसकी निष्ठा और सच्चाई।

16. आशीर्वाद प्राप्त करना

जब आपको आशीर्वाद या प्राणाहुति प्राप्त हो तब सतर्क निष्क्रियता की अवस्था में रहें। आध्यात्मिक शक्ति को पकड़ने या खींचने का प्रयास न करें और न ही उसका विरोध करें। बस एक स्वच्छ पात्र की तरह बने रहें जो उसमें उँड़ेली गई हर वस्तु को ग्रहण करने के लिए तैयार हो।

17. गुरु से संवाद

जब गुरु आपसे बात करें तब ईमानदार और स्पष्ट रहें, लेकिन अनावश्यक शब्दों का उपयोग न करें। यह समय अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने का या प्रभावित करने का नहीं है। उनसे प्रश्न तभी करें जब वे वास्तविक आध्यात्मिक आवश्यकता से उत्पन्न हों न कि जिज्ञासावश या परखने की भावना से।

18. गुरु-दृष्टि का उपहार

जब गुरु आपकी ओर देखें तो इसे अपना सर्वोत्तम सौभाग्य मानें। झूठी विनम्रता से अपनी दृष्टि न फेर लें और न ही आत्मविश्वास के साथ एकटक देखते रहें। उन्होंने आपकी ओर देखा इस बात को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारें और उस पवित्र दृष्टि को अपने भीतर गहराई तक उतरने दें। एक क्षण के मौन में कई घंटों की बातचीत से अधिक कहा जा सकता है।

विशेष कार्यक्रम

19. सामूहिक ध्यान सत्र के दौरान

ध्यान करते समय पूरी तरह स्थिर रहें। यदि आपको अंदर या बाहर जाना हो, तो स्वाभाविक विराम की प्रतीक्षा करें। यदि बाहर जाना आवश्यक हो तो दीवारों के सहारे ऐसे चलें जैसे छाया चलती है ताकि वहाँ के आध्यात्मिक वातावरण की शान्ति भंग न हो। यह याद रखें कि जब आप दूसरों के साथ ध्यान करते हैं, तो एक संयुक्त ऊर्जा क्षेत्र का निर्माण होता है, अतः आपकी अस्थिरता सभी को प्रभावित करती है।

20. भेंट के बारे में

जब आप कोई भेंट देते हैं तो ऐसा मानें जैसे आप ईश्वर को वही लौटा रहे हैं जो पहले से ही उसका है। भेंट साधारण, स्वच्छ और आडंबर से रहित होनी चाहिए। बिना किसी दिखावे के उसे चुपचाप रख दें। देने की भावना, भेंट के मूल्य से अधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

21. पवित्र वस्तुएँ

आपको कभी भी पवित्र वस्तुओं, पुस्तकों या उपकरणों को बिना अनुमति के नहीं छूना चाहिए। यदि आपको उन्हें दूसरे स्थान पर रखना ही है तो दोनों हाथों से ऐसा करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि आपने उस वस्तु को अच्छी तरह से पकड़ा हुआ है। पवित्र ग्रन्थों को कभी भी फर्श पर या गंदी जगहों पर नहीं रखना चाहिए। उनका वैसा ही आदर करें जैसा आप गुरु के शरीर का करते हैं।

22. व्यक्तिगत महत्त्व की वस्तुएँ

यदि आप अपनी कोई पवित्र वस्तु, जैसे कोई आध्यात्मिक डायरी या कोई पुस्तक साथ लाएँ तो उनका उपयोग न होने पर उन्हें स्वच्छ कपड़े में लपेटकर रखें। उनका दिखावा न करें या उन्हें गर्व की वस्तु न बनने दें। ये आध्यात्मिक प्रतिष्ठा के प्रतीक नहीं हैं; ये स्मरण के साधन हैं।

पवित्र वातावरण बनाए रखना

23. इन्द्रियों पर नियंत्रण

कृपया तेज़ सुगंध, खनकने वाले गहने या ऐसी किसी भी वस्तु का उपयोग न करें जिससे दूसरों को ध्यान केन्द्रित करने में मुश्किल हो सकती है। अपने फ़ोन और टैबलेट को पूरी तरह से '*साइलेंट मोड*' पर रखें, और सम्भव हो तो उन्हें बाहर ही छोड़ दें। पवित्र स्थान वह है जहाँ आप अपना संपूर्ण ध्यान दिव्यता पर केन्द्रित कर सकते हैं।

24. भावनात्मक रूप से शान्त रहें

पवित्र स्थानों में, लोग बहुत तीव्र भावनाएँ महसूस कर सकते हैं। अपने प्रसन्नता के आँसुओं या हर्ष की लहरों को बाहर प्रकट किए बिना भीतर ही अनुभव करें। साथ ही, यदि आप असहज महसूस करते हैं तो धैर्य रखें और इसे शुद्धिकरण की प्रक्रिया के अंश के रूप में होने दें। आपका शान्त रहना दूसरों को भी शान्त रहने में सहायक होता है।

25. दूसरों के प्रति सम्मान

यह समझें कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर है। किसी का आकलन न करें, तुलना न करें और न ही दूसरों की साधना में विघ्न डालें। यदि कोई व्यक्ति शिष्टाचार के नियमों का उल्लंघन करता हुआ प्रतीत हो तो उसे सम्भालने का कार्य ज़िम्मेदार लोगों पर छोड़ दें। आप अपने आचरण पर ध्यान दें।

26. सम्मान और प्रेम का पवित्र नियम

गुरुदेवों ने हमें सिखाया है कि जो भी वहाँ उपस्थित है उसका सम्मान करें क्योंकि हर व्यक्ति में दिव्यता की चिंगारी है। उन सबसे प्रेम करें जिन्हें गुरु प्रेम करते हैं –

और वे तो सभी से प्रेम करते हैं। उससे प्रेम करें जो सबसे प्रेम करता है; यही सभी के लिए भाईचारे का मार्ग है। पवित्र स्थान में हम प्रत्येक में गुरु को देखना सीखते हैं।

27. आलोचना के विष से दूर रहना

पवित्र स्थानों में आलोचना या दोष निकालने के लिए कोई स्थान नहीं है। ये आदतें बुरे संस्कार पैदा करती हैं और आध्यात्मिक वातावरण को किसी भी अन्य अनुचित आचरण से अधिक दूषित करती हैं। यदि आपको व्यवस्था अथवा कार्यप्रणाली में कोई कमी दिखाई देती है तो बिना कुछ कहे उसे लिख लें। बाद में, उसे सम्मानपूर्वक कागज़ पर लिखकर उचित माध्यमों से भेज दें। ऐसा करना सम्भावित आलोचना को उपयोगी सेवा में बदल देता है।

28. शान्ति स्थापित करना

आपकी उपस्थिति से उस स्थान की शान्ति और गहन होनी चाहिए। जैसे पानी की एक बूँद सागर में मिल जाती है, वैसे ही स्वयं को आध्यात्मिक वातावरण में विलीन हो जाने दें। यदि कोई मतभेद उत्पन्न हो तो शान्त रहते हुए मन ही मन प्रार्थना करके पुनः शान्ति स्थापित करने वाले व्यक्ति बनें।

29. वार्तालाप का पवित्र क्रम

कभी भी कार्यकर्ताओं या किसी अन्य से यह आग्रह न करें कि वे सबसे पहले आपकी बात सुनें। ऐसा आग्रह ईश-निंदा के समान है क्योंकि यह अहंकार को दैवीय व्यवस्था से ऊपर रखता है। धीरज रखें और अपनी बारी की प्रतीक्षा करें। यदि आपका मुद्दा संघ के आध्यात्मिक कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण है तो उसे बताने का समय स्वयं आ जाएगा। पवित्र स्थान ईश्वर के समय से चलता है न कि आपके समय से। प्राथमिकता की माँग करने का अर्थ है कि आपका अहंकार आध्यात्मिक पदानुक्रम से अधिक महत्त्वपूर्ण है – और यह बहुत गम्भीर आध्यात्मिक भूल है।

30. अन्य लोगों के आध्यात्मिक अनुभवों को देखना

यदि आप किसी अन्य व्यक्ति को गहन आध्यात्मिक अनुभव करते हुए देखें, तो दूर से ही सम्मानपूर्वक रहें। कृपया उन्हें घूरें नहीं, इसके बारे में न सोचें कि उन्हें क्या अनुभव हुआ होगा न ही बाद में इसके बारे में उनसे पूछें। आध्यात्मिक अनुभव आत्मा और ईश्वर के बीच निजी बातचीत हैं। अपनी जिज्ञासा को शान्त करना आपका काम नहीं है; बल्कि आपका काम मौन सहयोग के साथ उस स्थान की गरिमा को बनाए रखना है।

पवित्र स्थान से प्रस्थान

31. पीछे हटना

जब जाने का समय आए तब धीरे-धीरे अपने मन को उस स्थान से बाहर निकालें। आपको वहाँ जो भी प्राप्त हुआ है उसके लिए मन ही मन आभारी रहें, भले ही आपको इसकी जानकारी न हो। उठते समय जल्दबाज़ी न करें अपना समय लें।

32. विदा लेना

यदि गुरु वहाँ हैं तो उनके कहने अथवा सभा के स्वाभाविक रूप से समाप्त होने की प्रतीक्षा करें। जब आप वहाँ से निकलें तो पहले कुछ कदम पीछे हटें, फिर मुड़ें। ऐसा करने से दूर जाते हुए भी आपका आंतरिक सम्बन्ध मज़बूत बना रहता है। दरवाज़े पर पहुँचकर एक बार फिर मुड़कर प्रणाम करके विदा लें।

33. वापस जाना

जैसे ही आप बाहर निकलते हैं, अनुभव करें कि आप उस पवित्र वातावरण को अपने साथ लिए जा रहे हैं। यह संकल्प करें कि उस पवित्रता का कुछ अंश आप अपने दैनिक जीवन में सँजोकर रखेंगे। अपने जूतों को भी ध्यानपूर्वक पहनें, मानो आप संसार में कोई आध्यात्मिक कार्य करने जा रहे हैं।

उनके जाने के बाद

34. इसे सुरक्षित रखना

पवित्र स्थल से बाहर आने के बाद कुछ समय के लिए भीतर से शान्त बने रहें। तुरन्त ही सांसारिक बातचीत या गतिविधियों में न लग जाएँ। आपके वहाँ से जाने के बाद भी सूक्ष्म कार्य जारी रहता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई सुगंध कपड़ों में बनी रहती है।

35. अनुभवों को परस्पर जोड़ना

आपको जो भी अनुभव या अंतर्दृष्टि मिली है, उस पर थोड़ा सोचें लेकिन उस पर अधिक विचार न करते रहें। प्राणाहुति को सचेतन मन से भी गहरे स्तरों पर कार्य करने दें। जैसे कोई फूल धीरे-धीरे खिलता है वैसे ही पवित्र स्थल पर जो अंतस् में घटित होता है वह समय के साथ विकसित और परिवर्तित होता है।

36. अपने अनुभवों के बारे में बात करना

पवित्र स्थल में मिले आध्यात्मिक अनुभवों को साझा करने में बहुत सावधानी बरतें। बहुत जल्दी बताने से आध्यात्मिक ऊर्जा क्षीण हो सकती है। केवल तभी साझा करें जब वह किसी और की आध्यात्मिक यात्रा में सहायक हो सके और केवल उन्हीं लोगों से साझा करें जो उस बात को सम्मानपूर्वक ग्रहण कर सकें।

37. पवित्र समय का सम्मान

हमेशा बताए गए समय से दस मिनट पहले पहुँचें। देर से पहुँचने का अर्थ है कि आप गुरु और संघ के समय से अधिक अपने समय को महत्त्व देते हैं। पवित्र समय सामान्य समय जैसा नहीं होता; यह तो ईश्वर से मिलन का अवसर है। वहाँ जल्दी पहुँचने पर आपको भीतर से तैयार होने का समय मिलता है और बाकी सभी लोग भी अधिक तैयार हो जाते हैं। यदि किसी कारण से समय पर पहुँचना सम्भव न हो तो अगले उचित समय की प्रतीक्षा करें या जितना हो सके चुपचाप प्रवेश करें। ध्यान रखें, आध्यात्मिक कार्यों के लिए समय पर पहुँचना यह दर्शाता है कि आपकी आत्मा अपने प्रियतम से मिलने के लिए कितनी आतुर है।

विचार करने के लिए और भी पवित्र बातें

38. पवित्र स्थानों में बच्चे

यदि आप बच्चों को साथ ला रहे हैं, तो पहले ही उन्हें समझा दें कि यह स्थान कितना पवित्र है। बहुत छोटे बच्चे, जो शान्त नहीं रह सकते, उनका ध्यान रखने के लिए अलग स्थान होना चाहिए। सही मार्गदर्शन मिलने पर उनकी मासूम उपस्थिति उस पवित्र स्थल को और भी पावन बना सकती है।

39. पवित्र स्थानों में सेवा

यदि आपको सहायता प्रदान करने का अवसर मिले (जैसे सफ़ाई करना, व्यवस्था सम्भालना या सहयोग देना) तो उसे एक आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में करें। पवित्र स्थल में सेवा करना विशेष रूप से लाभकारी होता है। अपना कार्य शान्ति से, मनोयोग से और बिना किसी प्रशंसा की इच्छा के करें। अपने कार्य के माध्यम से अपनी सेवा को पूजा का स्वरूप बनाएँ।

40. नियमित रूप से उपस्थित रहने वाले लोगों का कर्तव्य

ऐसे पवित्र स्थानों पर बार-बार जाने वाले लोगों पर इसे पवित्र बनाए रखने का दायित्व अधिक होता है। नवागंतुक लोग देखकर ही सीखते हैं। बिना कोई दिखावा किए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें। आपकी शान्त उपस्थिति दूसरों को सहज महसूस कराने में सहायक होती है।

महत्त्वपूर्ण ज्ञान

हमेशा ध्यान रखें कि ये आचार-विचार केवल औपचारिकताएँ नहीं हैं; ये वास्तविक साधन हैं जो हृदय को खोलते हैं। प्रत्येक हाव-भाव, आत्म-संयम का प्रत्येक क्षण

और सम्मान का प्रत्येक कार्य आध्यात्मिक प्राणाहुति के लिए मार्ग खोलता है। पवित्र स्थल में हमारे बाहरी रूप-रंग से अधिक हमारी आंतरिक भावना मायने रखती है।

सर्वोत्तम आचरण है प्रेम – गुरु के प्रति प्रेम, ईश्वर के प्रति प्रेम, और किए जा रहे पवित्र कार्य के प्रति लगन। जब ऐसा प्रेम होता है तब सही आचरण स्वतः ही हो जाता है, जैसे नदी स्वाभाविक रूप से समुद्र की ओर बहती है।

जो भी पवित्र स्थानों में प्रवेश करें, यह जान लें कि वे पवित्र भूमि पर हैं, जहाँ परिवर्तन का दैवीय कार्य निरंतर चल रहा है। ईश्वर करे कि वे इन पवित्र स्थानों की पवित्रता को कम करने की बजाय उसमें वृद्धि करें।

"किसी स्थान पर किया गया आध्यात्मिक कार्य ही उस स्थान को वास्तव में पवित्र बनाता है। हमारे आचार-विचार उस पवित्रता को जीवित रखने का तरीका हैं – अपने लिए और उन सबके लिए जो हमारे बाद वहाँ आएँगे।"

आपको इन नियमों का पालन समझदारी और खुले मन से करना चाहिए, हमेशा भाव को शब्दों से ऊपर रखना चाहिए। गुरु की इच्छा हमेशा किसी भी नियम से श्रेष्ठ होती है। कभी-कभी जो शिष्टाचार का उल्लंघन प्रतीत होता है, वह वास्तव में उस परिस्थिति में ईश्वर की ही इच्छा का कार्यान्वयन होता है। हमेशा सजग, विनम्र और सीखने के लिए तत्पर रहें।

हृदय ही सबसे पवित्र स्थान है। सभी बाहरी आचार-विचार इस अंतरतम मंदिर को पवित्र बनाए रखने के अभ्यास हैं, जहाँ वास्तविक गुरुदेव सदैव निवास करते हैं।

सच्चा अभ्यासी

बाबूजी की शिक्षाओं के अनुसार आवश्यक गुण

बाबूजी की शिक्षाओं के अनुसार, श्री रामचन्द्र मिशन का एक सच्चा सदस्य (अभ्यासी) निम्न गुणों से पहचाना जाता है -

1. सच्ची प्रतिबद्धता और नियमित अभ्यास

- वह जो अभ्यास को निष्ठा, ईमानदारी और मनोयोग के साथ करता है
- वह ध्यान में नियमितता बनाए रखता है और बताई गई पद्धति का पालन करता है
- वह सर्वोच्च आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिबद्ध रहता है

2. सिद्धांतों के अनुसार जीवन

- वह जो गुरु के सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीता है और उनके आदेशों का पालन करता है
- वह श्रेष्ठ गुणों को बनाए रखता है और स्वयं को सुधारने का प्रयास करता है

- वह दूसरों के प्रति स्वीकार्यता रखता है, किसी के गुण-दोष नहीं देखता और अपने प्रति सख्त रहता है

3. विनम्रता और सरलता

- वह विनम्रता को प्राथमिकता के रूप में विकसित करता है
- वह सादा, सरल और निष्कपट बना रहता है
- उसमें अहंकार या आत्म-महत्त्व का भाव नहीं होता

4. उद्देश्य की स्पष्टता

- उसे ज्ञात है कि यह अभ्यास आध्यात्मिक प्रगति और क्रमिक-विकास के लिए है
- वह राजनीति, धन या अन्य सांसारिक प्रेरणाओं से विचलित नहीं होता
- वह समझता है कि आध्यात्मिक प्रगति के लिए व्यक्तिगत प्रयास आवश्यक है

5. प्रेम और समर्पण

- मालिक और अभ्यास के प्रति सच्चा प्रेम रखता है
- दिव्य मार्गदर्शन के प्रति समर्पण और आज्ञानुकूलता दर्शाता है
- वह स्वयं को आध्यात्मिक प्राणाहुति के प्रति ग्रहणशील बनाता है

6. व्यक्तिगत दायित्व

- वह समझता है कि उसकी आध्यात्मिक नियति उसी के हाथों में है
- वह आत्म-सुधार के लिए सतत प्रयास करता है
- वह निरंतर आत्म-चिन्तन और आत्म-मंथन में लगा रहता है

"यहाँ किसी बाहरी उपलब्धियों या संस्था के भीतर किसी पद
की बजाय निष्ठा, नियमित अभ्यास, विनम्रता और
आध्यात्मिक क्रम-विकास के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता पर स्पष्ट
रूप से बल दिया गया है।"

सच्चा अभ्यासी अपने हृदय में निष्ठा, आचरण में सरलता और ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण के साथ अपने मार्ग पर चलता है।

इस पवित्र यात्रा में प्रगति का मापदंड बाहरी मान्यता में नहीं बल्कि आंतरिक रूपान्तरण की गहराई में निहित है।

"हमारे मिशन का मुख्य उद्देश्य यह है कि जहाँ वर्तमान में आध्यात्मिकता का अभाव है, वहाँ सहज मार्ग के माध्यम से आध्यात्मिकता स्थापित की जाए, और मालिक का यह संदेश प्रसारित किया जाए – 'जागो, हे सोए हुए लोगों, यह प्रभात का समय है।'

बदलाव निश्चित ही रातों-रात नहीं आ सकता। लेकिन यदि हमारे मिशन के सदस्य प्रेम, धैर्य और सहयोग से काम करें तो यह लक्ष्य अवश्य पूरा होगा। मुझे ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो सूर्य की तरह जगमगाएँ। जब लोग जानेंगे कि हमारी पद्धति सही है, तो वे स्वयं आकर्षित होंगे।

एक शेर सौ भेड़ों से श्रेष्ठ है; फिर भी हमें मनुष्य होने के नाते दूसरों का आध्यात्मिक कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए। गुरु के मार्ग पर किया गया सच्चा परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। आमीन!"

–बाबूजी

heartfulness
purity weaves destiny